

DPN S638

Title: पाण्डव गीता स्तोत्र व नक्षत्रा फल
PANDAVA GĪTĀ STOTRA WA NAKṢA-
TRAYĀ PHALĀ

Run. No. 6329

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र व ज्योतिष
Hymn or Astrology

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

नेपाल भाषा नक्षत्र फल
Nepalī bhāṣā nakṣatra phala in Nep.

Size in cms. 18.8 x 6.8

Folios 13

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

centimeter 5

10

15

20

શીર્ષક પાના

૧. ડુગાં સતવાદ સુત્રિ (અપૂર્ણ, દ્વિયોગ અંશ સુ. 1 અપૂર્ણ)
૨. વિગ્રહ(૮) સ્તોત્ર (પૂર્ણ, કો. ૧-૨૧)
૩. પાણ્ડવ ગીતા સ્તોત્ર (પૂર્ણ)
૪. નક્ષત્ર ફલ (અપૂર્ણ)

सर्वसिद्धिदायकं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ सर्वसिद्धिदायकं
कालिनी चर्चनं नाम सप्तमं स्कन्धं ॥ यः पठेत् १०८ अक्षरं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सगच्छति ॥ अथ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वायि सर्वकामरूपदं मनयुर्लवदृष्टिः कामदेवाक्रमः ॥ विद्यादिमनसा
यस्य सकाशात् सर्वकर्मफलं वदन्ति विग्रहः ॥ यो मया नमस्तुभ्यं नमः ॥ अथ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यस्य यिह मां कुरु वदन्ति यद्वा कालं विवाहं ययन्ति सन्ति नमिन् ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

वमहासादि वरुयुधनागम। दीर्घोय रुवतनित्यं लाका नांय प्रमयि। मान
नदानय १० यमु गवां काटिरुल्ललरुत। सकयरुल्लवेव लरुतना १० यमु
१० यमु सकर्तुमुतुं देवीसंयकामया १०० देवयायुसोस्य यत्रुं स्वर्गसंयकामया
लाकाटिदानननमधसकनयि। रुल्लल्ललरुतनित्यं इर्गनामतकीधिकी। वरु
दसायुजाधन्या धन्यावेववसुधना। यायानिविलयंयानि १०० धादुर्गतिना
सक १०० निमार्क। लुययुवानननकोमिकययुक्तुति, मार्क। लुयवदति, इर्गस

नमो भगवते ॥ १ ॥ नमो भगवते ॥ २ ॥ नमो भगवते ॥ ३ ॥ नमो भगवते ॥ ४ ॥ नमो भगवते ॥ ५ ॥ नमो भगवते ॥ ६ ॥ नमो भगवते ॥ ७ ॥ नमो भगवते ॥ ८ ॥ नमो भगवते ॥ ९ ॥ नमो भगवते ॥ १० ॥

नानमा सुवन्दकृष्ण कोमा नीयियदग्नि ॥ ७ ॥ तालरावमहाबोडी यन्त्रादि
 टाकटि वडुदु मदसा नि ॥ ८ ॥ उंकायविकटी सोम्य महासुलविनासनी जयति
 विजयकृष्ण संगमविजययद ॥ ९ ॥ कालत्राणिमहाबोदि अष्टमिनवमीयिय
 कयितयिगलकाय नयकाय नसीतेरु ॥ १० ॥ मसि सूर्यसमासास विप्रकलि
 कलुलामवविथ्या कनगन अष्टमागमसाविन ॥ ११ ॥ कालिकालिमहाबोडी म
 मासवलियिय निभूलकात्रिनिदवि जिननुववनश्ववि ॥ १२ ॥ दवदवाधिययव

युरुमासां वडुदमी इग्नीनायनदग्नी वधनालिमहाबोवा ॥ १३ ॥ साहंवा
 अयविउष्ट्र सुकृष्णविषमन अर्द्धिभलनयाय नवदवीसुलश्वनी ॥ १४ ॥
 नाहिमांयदयनाकि सूर्यसूर्यवदामाह दग्निनुगगादवि इग्नावनमवविन ॥ १५ ॥
 अष्टवत्समहावाहा संगमविजयनव मल्लसादादिनिजित हत्वाकोनववारिनी ॥
 १६ ॥ निस्कलककनवाञ्छी उंऊस्यगावि रुसह ॥ नवगुर्झनमसां यविग्या
 यनासन ॥ १७ ॥ यय ० किनवा रुघांनरुयविद्यनै यस्तनवायवासवा यकश्चि

x कविन

॥ न कल उवाच ॥ यदि गमनमधस्तात् कामयाग्नवद्वा यदि व कलविहीनं उभ
 मयक्रिकीन ॥ किं निभगमयिगत्वा न भगवत्येनवात्मा रुक्मसमदृदि र्कं कं वर
 किं वका ॥ स रुक्म उवाच ॥ अयां मीययना भन गृह दिवा च वा नो यधिग
 रुक्म वा यदस्मि किं विसृष्टं न कर्मया उनादेन स न कर्म न तु घात ॥ को ह्युवाच ॥ स
 कर्मरुलनिदिष्टं यां यां यां नियुजामाह ॥ न स्यां न स्यां ह वां कं त्वयि रुकि दृष्ट
 मुम ॥ दोषश्च वाच ॥ न स्य यद्वा रुस्य विष्णु न तु लनं उ स ॥ यत्ना मया यक

र्वकि न स्यायी ह न मानमभा स रुक्म उवाच ॥ वा स रुक्म स्य यं रुका भा का रुक्म न
 मानसा भन सदा भा सदा लक्ष्म रुक्म न नि उ माने ॥ धर्मा वाच ॥ कीट घृयकि
 यमृग यमृ स नी रुय व रुक यि भा व मन उ ययिय न न ॥ हाना मुन रुक्म कं व व लु स
 दा त्वय रुकि न च वा लु रिवा नि ली वा ॥ अश्व सुभा वाच ॥ न त साने समा सा द्य डं व दी
 यमहात्मन ॥ न रुक्म कं वा दभा व द्यया य वि कि ल क ॥ धृ न वा रुक्म उवाच ॥ ना द
 रुक्म उमदृष्टं विना सा गल सी गम ॥ या व क मलय गार्क न स मा मि उ ना दे न ॥ विद

लडवाच॥ आलाक सर्वसाक्षानि विचार्यचयनऽयनऽ॥ ०० दमकमनिस्यत्नं
 या नावाय (लासदा॥ वासडवाच॥ सत्यं सत्यं यनमस्यं सत्यं वाग्विदवाववीत
 नास्ति वदाल्यनं मां नदवाकधवात्यनं॥ र्हाषाडवाच॥ यसर्वदा कृष्णमनस
 नति कृष्णं चरु क्वायलमनिकृष्णं नमृत्य कालं यविष्ठाकिकृष्णं हविष्यथा मः
 लुङ्गीह नासनी॥ संजयडवाच॥ यमानवा विगत नागयवायवाहा नावायनं
 सूत्रयुनं सननं सननं॥ यनननह नकिं लिखवदनासु याहुऽयथाधयन

सनयनऽयिवनि॥ दालडवाच॥ नकादधीमयवसीति निववरुका सम्यत्स
 लवकसमीहविमर्षयति॥ नलो नया लु नयटा ०० ववाजहं साऽसंसावसाग
 वजनस्य नवीनियानं॥ कलडवाच॥ नकोहि कृष्णऽसृष्टकृष्णसृष्टकृष्णगुल
 मी दभा स्वमधीनहीयान तुल्या दभा स्वमधीयनववज्ज्म कृष्णयालमीः
 नयनऽरुवाय॥ द० भासनडवाच॥ ययह नाच क प्रवैल दल्या कुलाक नाथ
 नऊ नादनेन नकगनावीनि लयं सवानां कात्यायिदवसाववेलडुली॥ नथ

20

विवाहदिन ॥ १ मासानकदिन ॥ वान ॥
 रुक् ॥ ग्राहिन ॥ मिथि ॥ २ शनि ॥ मृगशिरा ॥ आदित्य ॥
 उ३ ॥ अश्विन ॥ युधि ॥ ३ शनि ॥ रुक् ॥ वृ३ ॥
 स्याति ॥ नाग ॥ ४ शनि ॥ वि३ ॥ वृ३ ॥
 मद्य ॥ व३ ॥ ५ शनि ॥ स्याति ॥ वृ३ ॥
 अनुनाद ॥ वृ३ ॥ ६ शनि ॥ वि३ ॥ वृ३ ॥
 मृगशिरा ॥ वृ३ ॥ ७ शनि ॥ वि३ ॥ वृ३ ॥
 श्रवति ॥ वृ३ ॥ ८ शनि ॥ वि३ ॥ वृ३ ॥

मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा
आदि	आदि	आदि	आदि	आदि	आदि	आदि	आदि
मृग	मृग	मृग	मृग	मृग	मृग	मृग	मृग
मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा	मृगशिरा
स्याति	स्याति	स्याति	स्याति	स्याति	स्याति	स्याति	स्याति
वृ३	वृ३	वृ३	वृ३	वृ३	वृ३	वृ३	वृ३

वृ३ ॥ मृगशिरा ॥ वि३ ॥ मृगशिरा ॥ वि३ ॥ मृगशिरा ॥ वि३ ॥ मृगशिरा ॥ वि३ ॥
 मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥
 मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥ मृगशिरा ॥

हुं कं स ल क ल म ना दि श्री ॥
 न व र्थ यै र्ध र जू वि व र्ति ॥
 आ थ ना लि क्ष त म त र्न ॥
 वि रा का न स र थ या व रि क
 व द ग स क ल म या ॥ न ल म या
 ग क थो ह र वा ग य व र्दि

सि पू र्व का र दि न ॥
 ल म्भ जी र ॥ त्र व ति
 म द्य ॥ वा र ॥
 आ हि वृ थ ३
 अ नू रा ण ॥ ७ ५ क
 मू र ॥ १ ६ ८ म ति १
 २ ३
 ४ ५

१ थ स मा क्का य ॥
 अ ग्नि नी ॥ ति थि
 आ हि नी यदि
 अ नू रा ण दि रा क २
 मू र ॥ वा र ॥ य थ २ मि १
 ७ ३ आ १ द ग मी
 ह स १ ७ ७ ४
 सा नि १ १ १ १

१ दू वा र थ य न ॥ ७
 ७ ३ ॥ ति थि ॥ जी व
 आ हि न ॥ यदि १ ॥ वा र
 अ नू रा ण दि रा क २
 य थ १ ॥ मि १
 मू र ॥ वा र ॥ य थ २ मि १
 ७ ३ आ १ द ग मी
 प्र व ति ॥ अ ग्नि मि १ ७ १
 १ ७ १ ७ १
 १ न व मि १ ७ १
 १ द स मि १ ०

निरुपयदिन ॥ श्रीदमी १३
 य३ निथि ॥ श्रीदमी १३
 विमरय यदि ॥ वान ॥
 रानि द्विराक २ ॥ श्री १
 दलिक यमि ३ मि २ ॥ वू ७
 मद्य यममि १ ॥ वृहस्यनि २
 वन यममि १० ॥ श्री ३
 रानि यकादमी १

दूसरायदिन ॥ श्रीदमी १३
 मन्मसि ॥ वान ॥
 वृद्ध श्री १
 नवनि श्री ३
 वनवसु २ १
 हस्त
 शवन

आकिदूतदिन ॥ निथि ॥
 नाहि ॥ नवनि ॥ यदि ॥
 मन्मसीन ॥ मूत्र ॥ द्विराक २
 उ३ ॥ नववृष ॥ यमि २
 हस्त ॥ वान ॥ ॥ श्रीदमी १३
 किशो श्री १
 वृहस्यनि २ ॥ श्रीदमी १३

॥ श्रीदमी १३
 मद्य नाहि
 मन्मसीन ॥ उ३
 हस्त ॥ वान ॥
 स्वानि ॥ वू ७
 अनूनादि ॥ वृ १
 नवनि ॥ श्री ३

centimeter 5

10

15

20

अग्निमीनः ॥ सतिवाहन ॥ देवजाति ॥ सति सत्त्व ॥ उग्र गृह
 दाल ॥ नद्यवर्ष ॥ वास्तुमूल ॥ उद्धथित ॥ वायुशर्मन्तन ॥ भ
 र्वासि ॥ तनेसूना जात ॥ भवति ॥ तज्जि साहाजी ॥ म्हा
 नेनायक ॥ यासादिक ॥ दाना ॥ कुरकाति ॥ वृन्तकार्य ॥ विद्या
 रोगी ॥ वनवन ॥ वनचित ॥ वात्रहायदाजिद ॥ यावानसुस्ति ॥
 राजनज्जहिमानी ॥ क्रियकोपि ॥ सत्तवृद्धि ॥ मेधन प्रिय

ययउज्जु ॥ नित्रक ॥ लगानि ॥ कयान ॥ नासकुक ॥ अकाल
 मृष्ट वर्ष १ वर्ष २ अतिसान ॥ वर्ष ३२ समुघात ॥ वर्ष ३२ द
 अतिसान ॥ वर्ष १० नानादाख ॥ वर्ष २१ सियमसहय ॥ व
 र्ष ३२ जात्र अतिसान ॥ वर्ष ५१ नद्यादिहय ॥ वर्ष १० अति
 हय ॥ वर्ष ५१ अकाल मृष्ट ॥ धनिहायहनसा ॥ यमायु
 ११ यन न दिवनि ॥ ॥ १ ॥ भागविना ॥ जात्र अतिसान

भा० स्याक ॥ मिखा स्याक ॥ जू जिन ॥ शुभ्रिनीनक्षत्रा रुने ॥
 १८३ निनक्षत्र ॥ यत्र न वाहान ॥ मानूक जाति ॥ जमदवमा ॥ उ
 १८४ छान ॥ किसि सत्व ॥ उगस्रहाव ॥ भववि ॥ वनचिन
 यियद सनि ॥ त्यानी ॥ अक्षययि ॥ वे स्या हा आ यिय ॥ यी १२
 सुखि १५ विद्रस यिय ॥ वनवन ॥ मी ३ कन्या ॥ जू १४ या र्य १३
 मी ॥ अ १५ नक्षत्र ॥ भूय मासि ॥ कू दू यि ॥ श्री न श्रू न्या ॥

'देव हकि ॥ कामिनी ॥ वानके दू १४ र्वि ॥ १८५ सु र्वि ॥ वनव
 लि ॥ ग्राहान स वनमथाक ॥ भव्या वनसमाहि ॥ ग्राहसि
 वंके ॥ भव सत्यमदु ॥ ग्राग जू निमान ॥ कामग्राग ॥ वर्य १
 क्षान अतिमान ॥ वर्य ६ मिखा स्याक ॥ वर्य १० ग्राहय ॥
 वर्य १६ जावक रु यिजा ॥ वर्य २४ वृ यारय ॥ सखद्यान
 वर्य ३० मयतिरा नागदा र ॥ वर्य २० दवदा र ॥ धू नि

रुय रुनसा ॥ यमा यू २३ यमन जि त नि ॥ ७ ॥ २ ॥
रुलिकन कर ॥ अग्नी कृ लु वाहन ॥ राक्षस जा मि ॥ अग्नि
देवन ॥ का वात्र सत्व ॥ यव गृह दान ॥ अक्ष मुख ॥ मि श्र
वर्न ॥ अग्निर्म लु न ॥ वि यिन आचन ॥ वि स नि मू ह न ॥ वी सा
यनी ॥ गम न ॥ कलि र्ग म्भ न ॥ भ व्या वि ॥ वि य द भ नी ॥ नृ स
ह हा गी ॥ यू ल ला ह ॥ वृ ह वि न ॥ स ल हा वि न ॥ वृ ह मि न